हंस और कौआ

महाभारत की एक कथा पर आधारित

हिन्द महासागर के सुदूर उत्तरी किनारे पर एक किसान रहता था, जिसके तीन छोटे बच्चे थे। एक कौए ने उनके बगीचे में एक घोंसला बना लिया था और वे तीनों बच्चे उस कौए से बहुत प्यार करते थे। प्रतिदिन दोपहर का भोजन समाप्त करने के बाद बच्चे, अपना झूठा भोजन कौए के खाने के लिए बगीचे में रख देते थे। दही, मीठा दूधभात, मक्खन और शहद खा लेने के बाद कौआ खेत में चारों ओर अकड़ कर चलता और बच्चे उसकी प्रशंसा के गीत गाते। "तुम कितने शानदार कौए हो! कितने सुन्दर, कितने आकर्षक!" खाने और प्रशंसा के घमंड से भरा, वह कौआ शीघ्र ही अपने आप को दूसरे सभी पक्षियों से श्रेष्ठ समझने लगा था। जब कभी बच्चों द्वारा रखे हुए खाने के आसपास दूसरे पक्षी मँड़राते थे, तो वह कौआ कर्कश आवाज़ें निकालने लगता और सबके साथ तब तक लड़ाई करता जब तक कि वे सभी अन्य पक्षी उड़कर दूर नहीं चले जाते और सारे खाने पर अकेले उसी का अधिकार नहीं हो जाता था।

एक दिन जब बच्चे बगीचे में उस कौए की प्रशंसा करते हुए उसे आकाश का चैम्पियन बुला रहे थे, ऊपर आसमान में कुछ हंस, पत्ती के आकार में उड़ते हुए जा रहे थे।

ऊपर की ओर देखते हुए, कौए ने हंसों को आवाज़ दी, "क्या तुमने यह सुना? मैं आकाश का चैम्पियन हूँ! तुम सब केवल कुरूप बत्तखों का झुण्ड हो!"

कौए की डींगे सुनकर, हंसों के मुखिया ने एक चक्कर लगाया और धीरे से बगीचे में उतर गया। हंस ने कहा, "मैं मानसरोवर से आया हुआ एक महान हंस हूँ। मैं साल दर साल आकाश पार करता हूँ और मुझमें बिना विश्राम किए समुद्र लाँघने का भी सामर्थ्य है। यदि तुम खुद को आकाश का चैम्पियन समझते हो तो मैं तुम्हें उड़ने में मुकाबला करने की चुनौती देता हूँ!"

कौए ने घंमड से काँव-काँव की आवाज़ कर कहा, "हुँह! मेरा उड़ने का कौशल तो बेमिसाल है। मैं तुम्हारी चुनौती स्वीकार करता हूँ। रुको, मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं कैसे जीतूँगा। मैं एक सौ एक प्रकार की विचित्र गतियों से उड़ूँगा- कलाबाजी खाते हुए ऊपर उठूँगा, झटके से नीचे आऊँगा, झपट्टा मारकर सीधे ऊपर जाऊँगा, भँवर जैसे चक्कर लगाते हुए उड़ूँगा। मैं ऊँचा उड़ूँगा और नीचा उड़ूँगा, धीमे से हवा में तैरते हुए उड़ूँगा, फ़िर मैं स्वयं को तेजी से आगे की ओर ज़ोर से धकेलूँगा। मैं कई तरह

के अनदेखे करतब दिखाऊँगा। और हंस तुम, मेरे डरावने प्रतिद्वन्दी, मुझे कभी भी पकड़ नहीं पाओगे।"

हंस ने शान्ति से उत्तर दिया, "प्रिय कौए, जब मैं उड़ने लायक हुआ तब मैंने उड़ने का एक ही तरीका सीखा था जो पीढ़ियों से हम हंसों के काम आ रहा है और मैं उसी के अनुसार उड़ूँगा। मैं तुम्हें अवश्य ही पराजित कर दूँगा, इस बात को लेकर मेरे मन में तनिक भी शंका नहीं है।"

हंस और कौआ, दूर के एक छोटे द्वीप तक उड़ान के मुकाबले के लिए सहमत हो गए और उन्होंने हवा के झोंके के साथ अपने पंख फड़फड़ाकर उड़ान भरी।

हंस तेज़ गति के साथ द्वीप की ओर उड़ चला। उसके लम्बे और चमकीले पंख उसे आकाश में स्थिर गति से आगे बढ़ा रहे थे। उसकी उड़ान गरिमा एवं शक्ति से परिपूर्ण थी।

" आऽहाऽ !" कौआ बिजली की गति और जोश के साथ उसके आगे चला। वह अंग्रेजी के आठ अक्षर का आकार बनाते हुए, हवा में कलाबाजियाँ खाते हुए, झपट्टा मारते हुए, चक्कर लगाते और गोल घूमते हुए उड़ रहा था। इस पूरे समय वह अपनी जीत की भविष्यवाणी करते हुए, हंस का मज़ाक उड़ाता।

आधे रास्ते आते-आते, कौए को महसूस होने लगा कि उसकी ऊर्जा समाप्त हो रही है। वह साँस लेने के लिए हाँफने लगा और तेजी से ऊपर से नीचे आने लगा था। उसने नीचे देखा- ऐसा लग रहा था जैसे भयानक सागर उससे मिलने ऊपर आ रहा है। डर के मारे वह व्याकुल होकर चीखने लगा, "यदि मैं और अधिक न उड़ सका तो मैं कहाँ गिर पड़ूँगा? मेरा क्या होगा? मैं तैर नहीं सकता !"

कौए की चीख सुनकर, हंस ने पलटकर देखा कि वह लहरों के बिल्कुल ऊपर थपेड़े खा रहा था। उसके काले पंखों के किनारे, पानी की सतह से टकरा रहे थे। और फिर छपाक! कौआ पानी से पूरी तरह भीग गया।

"काँव, काँव! मदद! हे हंस मेरी मदद करो नहीं तो मैं निश्चित ही डूब जाऊँगा!"

हंस नीचे कौए की ओर तेज़ी से उतरा।

कौआ घबराकर बोला, "हे प्रिय हंस, मेरा जीवन तुम्हारे हाथ में है, मुझे बचा लो !"

उस उदार हंस ने सतह से नीचे गोता लगाया, कौए को अपनी पीठ पर बिठा लिया और आकाश में ऊपर उड़ चला। वह गरिमामय तरीके से पलटा और वापस खेत की ओर उड़ा। वह बगीचे में उतरा और उसने झुककर अपनी पीठ से भीगे हुए कौए को धीरे से, नरम घास पर उतार दिया। हंस कौए के पास रुककर उसको सान्त्वना देता रहा जब तक कि उसे अपनी शक्ति पुनः प्राप्त न हो गई। हंसों ने पुनः अपनी उड़ान आरम्भ कर दी। कौआ उन उदार पक्षियों को अपने स्थिर और गरिमामय मार्ग पर आगे जाते हुए देखता रहा।

कौआ धीरे से अपने घोंसले की ओर जाने लगा। उसने महसूस किया कि उसके घमंड ने तो उसे डुबो ही दिया था और उसी महान जीव ने उसके प्राण बचाए, जिसका उसने मज़ाक उड़ाया था। बहुत ही नम्रतापूर्वक कौए ने शपथ ली कि वह अपना स्वार्थी तरीका बदलेगा। वह दूसरों के प्रति मित्रतापूर्ण तरीके से व्यवहार करने लगा और उसने हरेक पक्षी तथा जीवों के सद्गुणों को पहचानना आरम्भ कर दिया। उस दिन के बाद से कौआ कभी भी पास में उतरने वाले अन्य पक्षियों के ऊपर न तो चीखा न उनके साथ लड़ाई की। बल्कि वह बच्चों द्वारा दिए गए खाने को प्रसन्नता से उनके साथ बाँटता और उन्हें उस महान हंस की कहानी सुनाता जिसने उसकी जान बचाई थी।

***

'महाभारत', महर्षि वेदव्यास द्वारा संस्कृत में रचित एक महाकाव्य है। महाभारत को भी 'रामायण' के समान ही भारतीय साहित्य की सर्वाधिक प्रसिद्ध रचनाओं में से एक माना जाता है। यह कहानियों और सिखावनियों से भरा पड़ा है साथ ही इसमें श्री भगवद्गीता का आध्यात्मिक ख़ज़ाना भी है।

***

© २०१६ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउण्डेशन® ।सर्वाधिकार सुरक्षित।